संपादकीय

प्रिय पाठको! भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत समृद्ध एवं प्राचीन है। इसमें भाषा को सीखने का एक शक्तिशाली साधन बताया गया है और मातृभाषा में सीखना जीवन को सफल बना देता है। अतः स्थानीय व भारतीय भाषाओं में विकसित अध्ययन सामग्री सीखने को बढ़ावा देने के साथ नई सभ्यता के पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त करती है। इन्हीं प्रयासों को सुदृढ़ता प्रदान करते हुए शिक्षा मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा शिक्षार्थियों के लिए 52 भारतीय भाषाओं में प्राइमर (डिजिटल सहित) विकसित किए गए हैं, जो शिक्षार्थियों को उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा तक पहुँच प्रदान करने में सहायक होंगे। इस अंक में इसी तरह की नवाचारी पहलों को लेखों व शोध पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों के अनुरूप भाषा का होना अति महत्वपूर्ण है, इसलिए भाषा ऐसी हो, जो विद्यार्थियों के समावेशी विकास में सहायक हो। इसी पर आधारित लेख 'समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा—समसामयिक परिप्रेक्ष्य' इस अंक में दिया गया है, जिसमें बताया गया है कि समावेशी शिक्षा के लिए समावेशी भाषा, समानता तथा सामाजिक न्याय एवं सीखने के प्रतिफलों को बढ़ावा देती है।

बच्चों के समग्र विकास हेतु उन्हें गुणवत्तापूर्ण व अनुभव-आधारित शिक्षा तथा भारतीय आदर्शों एवं मूल्यों की शिक्षा दी जाए। इसी पर केंद्रित लेख 'अनुभवात्मक शिक्षण की एक नवाचारी पहल प्रेरणा' इस अंक में दिया गया है। इस लेख में, 'प्रेरणा' कार्यक्रम की उपयोगिता के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अनुभव एवं गतिविधि आधारित ज्ञान तथा कौशल सीखना भी सम्मिलित है।

प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह समाज की उन्नति व कल्याण के लिए कार्य करे। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा हमारा मार्गदर्शन करती है। इसी पर आधारित लेख 'प्राचीन भारतीय ज्ञान विरासत द्वारा भारत का समग्र विकास—*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का एक व्यापक लक्ष्य' प्रस्तुत किया गया है। इसमें शिक्षा द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को समावेशित करते हुए मानवीय मूल्यों, कर्तव्यनिष्ठता एवं समाज कल्याण के लिए प्रत्येक व्यक्ति का समग्र विकास करना बताया गया है।

मानव एवं प्रकृति का अटूट संबंध है। इस संबंध को मनुष्य द्वारा प्राचीन समय से ही मौखिक रूप से लोक कथाओं के माध्यम से संरक्षित किया गया है। इन लोक कथाओं में मानव, प्रकृति एवं अन्य जीव-जंतुओं के साथ सह-संबंधों को प्रस्तुत किया गया है। इसी पर आधारित लेख 'लोक कथाओं में मानव और मानवेतर जीव संबंध—एक शिक्षणशास्त्रीय विवेचना' दिया गया है, इसमें वन्य जीव-जंतुओं के साथ मनुष्य के संबंधों के अलग-अलग पहलुओं एवं मूल्यपरक शिक्षा का वर्णन किया गया है।

विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी प्रदान की जा सकती है, जब उसमें आवश्यकतानुसार संसाधन, शैक्षिक वातावरण और अनुभवी एवं दक्ष अध्यापक हों। साथ ही, इन सभी को सार्थक मार्गदर्शन देने हेतु एक सक्षम विद्यालय प्रमुख हो। विद्यालय प्रमुख ही

विद्यालयी व्यवस्था एवं विद्यार्थियों के अपेक्षित अधिगम-प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु समस्त प्रयास करता है, इसलिए उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसी पर आधारित लेख 'विद्यालयी शिक्षा का आधार — विद्यालय प्रमुख' में विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण कौशल में सुधार, विद्यार्थियों की संलग्नता, सक्रियता तथा ठहराव आदि में विद्यालय प्रमुख की भूमिका एवं कर्तव्यों पर प्रकाश डाला गया है।

विद्यार्थियों में गहन चिंतन, तार्किक स्वभाव, आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या-समाधान करने की दक्षता का विकास करने में गणित एवं विज्ञान विषय का विशेष योगदान है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'उत्तर भारत के उन्मुख जिलों में विज्ञान शिक्षा में सीखने के प्रतिफलों का स्तर — एक अध्ययन' दिया गया है। इस अध्ययन में पाया गया है कि विद्यार्थियों का विज्ञान शिक्षा (कक्षा 10वीं) में सीखने के प्रतिफलों का प्रतिशत औसत है। अतः विज्ञान शिक्षा में गतिविधियों, इंफोग्राफिक्स, माइंड मैप, इंटरैक्टिव वीडियो आदि का उपयोग कर अधिगम-शिक्षण को रोचक बनाया जा सकता है।

कोई भी देश अपनी शिक्षा व्यवस्था को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी एवं उच्च स्तरीय बनाने हेतु अधिक धन निवेश करता है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वित्तीय निवेश एवं व्यय — ब्रिक्स देशों का तुलनात्मक अध्ययन' प्रस्तुत किया गया है, जिसमें ब्रिक्स देशों में शिक्षा पर किए जाने वाले निवेश एवं व्यय का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, इसमें भारत सहित अन्य ब्रिक्स देशों की शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप एवं उसके घटकों को बताया गया है।

शोध अध्ययनों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से विद्यार्थियों की उपलब्धि का आकलन मानक परीक्षणों से किया जाता है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'हिंदी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण के मानकीकरण की प्रक्रिया' दिया गया है, जिसमें हिंदी व्याकरण उपलब्धि परीक्षण के मानकीकरण की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डाला गया है।

पत्रिका के अंत में '*विद्यालय में समाज*' नामक पुस्तक की पुस्तक समीक्षा दी गई है, जिसमें समाज तथा विद्यालय के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, समाज की विद्यालय से अपेक्षाओं और विद्यालय की समाज से अपेक्षाओं से जुड़े विविध सरोकारों को प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, क्षेत्र (फील्ड) अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति